

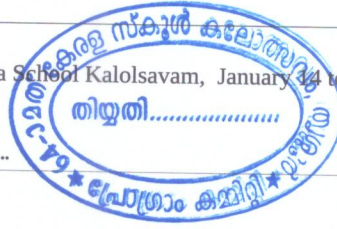
तो मैं क्या करूँ

किताबों की महक
मोबाइल की चमक में
धीरे धीरे धुँधला रहा है।
तो मैं क्या करूँ

सड़कों पर गिरा हुआ सच
लोगों के भीड़ में शँका मचाना गया।
तो मैं क्या करूँ
इस दुनिया में

बचपन की थाली
ऊँगलियों के नीचे लोक में
सिमर गई है।
तो मैं क्या करूँ

प्रकृति माँ की पुकार
कानों में गूँजता रहा है



पर सब खामोश थी
तो मैं क्या करूँ

जंग की शह,
एक तूफान तरह, बाँट रही है
अनेक जीवन को
तो मैं क्या करूँ

लड़की की आँखों में
रोक कर रही सपनों
धीरे धीरे गम होती हैं।
तो मैं क्या करूँ

मानव की विकास के लिए
संस्कृति को पीछे छोड़ गए हैं।
तो मैं क्या करूँ
इस दुनिया में

दूसरों की दुख और खामोशी
का अर्थ समझ न के लिए



64th Kerala School Kalolsavam, January 14 to 18, 2026, Thrissur

Item Code: 641

Participant Code: 038



समय नहीं मिल इस दुनिया में
तो मैं क्या करूँ

इस आधुनिक युग में
प्रकृति अकेला बैठता है।
इस कायनात को बदलने के लिए
तो मैं क्या करूँ ?

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).